नदियों के सरंक्षण एवं जीर्णोद्धार हेतु जागरूकता कार्यक्रम

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत "सेलेब्रशन ऑफ रिवर्स" केविषय पर नदियों के सरंक्षण एवं जीर्णोद्धार हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन दिनाँक 9 दिसम्बर, 2021 को किया गया । **डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ., प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग** ने सर्वप्रथम सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया । **डॉ. एस.एस. सामंत, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला** ने मुख्य वक्ता **ई. पीयूष रंजन, निदेशक, केंद्रीय जल शक्ति आयोग, शिमला,** हिमाचल प्रदेश का इस कार्यक्रम में आने हेतु संस्थान का आमंत्रण स्वीकार करने के लिए धन्यवाद किया । अपने उदघाटन भाषण मे, डॉ. सामंत ने बताया कि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय सहित भारत सरकार के विभिन्न संबंधित मंत्रालय नदियों के संरक्षण और रखरखाव पर जोर दे रहे हैं । संस्थान ने हाल ही में संबंधित राज्य एवं केंद्रशाषित प्रदेशों के वन विभागों की सहायता एवं सहयोग से वानिकी गतिविधियों के माध्यम से ब्यास, चिनाब, झेलम, रावी और सतलुज नदियों के जीर्णोद्धार हेतु विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की है । उपरोक्त डी.पी.आर. अंततः संबंधित राज्य वन विभागों अर्थात हिमाचल प्रदेश (ब्यास, चिनाब, रावी और सतलुज), जम्मू और कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश (झेलम और चिनाब) और पंजाब (ब्यास, चिनाब और सतलुज) द्वारा कार्यान्वित की जायेगी ।

मुख्य वक्ता **ई. पीयूष रंजन** ने उतर भारत की नदियों के महत्व पर एक विशेष व्याख्यान दिया । उन्होनें कहा कि भारत की नदियाँ भारतीय लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । नदियां पीने और सिंचाई के लिए पानी तथा बिजली उत्पादन के साथ-साथ देश के बड़ी मात्रा में लोगों के लिए आजीविका भी प्रदान करती हैं। यही कारण है कि भारत की लगभग सभी प्रमुख बस्तियाँ/ शहर नदियों के किनारे बसे हैं । हिंदू पौराणिक कथाओं में भी नदियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है और देश के सभी हिंदुओं द्वारा इन्हें पवित्र माना जाता है । उन्होनें केंद्रीय जल आयोग के उद्देशय और कार्य के बारे में भी अवगत कराया ।

डॉ. संदीप शर्मा समूह समन्वयक अनुसंधान एवं नोडल अधिकारी इंडस बेसिन, डी.पी.आर. ने बताया कि वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सिंधु बेसिन की पाँच प्रमुख नदियों के जीर्णोद्धार के लिए संस्थान ने ब्यास, चिनाब, रावी, सतलुज और झेलम की विस्तृत डी.पी.आर. तैयार की है, जिसमें नदियों के जीर्णोद्धार हेतु विभिन्न पौधरोपण मॉडल एवं मृदा एवं जल सरंक्षण उपाय सुझाए गए हैं । उन्होनें सतलुज नदी की डी.पी.आर. की भी विस्तार में जानकारी दी । इसके अलावा अन्य चार नदियों की डी.पी.आर. के समन्वयक डॉ॰ जगदीश सिंह (झेलम डी.पी.आर.), डॉ॰ अश्वनी

टपवाल (चिनाब डी.पी.आर.), डॉ॰ रणजीत कुमार (रावी डी.पी.आर.) तथा डॉ॰ वनीत जिश्टु (व्यास डी.पी.आर.) ने संबन्धित नदियों की डी.पी.आर. की विस्तृत जानकारी दी तथा उन्होनें नदियों की उपयोगिता, मुद्दों, प्रस्तावित प्रारूपों और उनसे होने वाले लाभों के बारे में विस्तार से बताया । डॉ॰ सामंत, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सरहाना की तथा सभी वक्ताओं के योगदान को संक्षेप में बताते हुये उनका धन्यवाद दिया । कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारियों, शोधार्थियों, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों एवं वन विज्ञान केन्द्रों के कर्मचारियों के आलावा वन विभाग हि.प्र. तथा जम्मू कश्मीर, केंद शासित प्रदेश के अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित 60 प्रतिभागिओं ने ऑफ लाइन तथा ऑनलाइन के माध्यम से भाग लिया । कार्यक्रम के अंत में **डॉ॰ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी** ने मुख्य अतिथि, संस्थान के निदेशक, अन्य सभी वक्ताओं, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम की झलकियां

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर

हिमाचल 10-12-2021

नदियों के संरक्षण पर एचएफआरआई में मंथन

शिमला| हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा भारत सरकार के सेलेब्रेशन ऑफ रिवर्स कार्यक्रम के तहत नदियों के सरंक्षण एवं जीर्णोद्धार के लिए जागरुकता सेमिनार का आयोजन किया गया। प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग एवं वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। एचएफआरआई के निदेशक डॉ. एसएस सामंत ने मुख्य वक्ता ई. पीयूष रंजन, निदेशक, केंद्रीय जल आयोग का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय सहित भारत सरकार के विभिन्न संबंधित मंत्रालय नदियों के संरक्षण और रखरखाव पर जोर दे रहे हैं। संस्थान ने हाल ही में संबंधित राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेशों के वन विभागों की सहायता एवं सहयोग से वानिकी गतिविधियों के माध्यम से ब्यास, चिनाव, झेलम, रावी और सतलुज नदियों के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की है। यह डीपीआर संबंधित राज्यों द्वारा कार्यान्वित की जाएगी।

मुख्य वक्ता ई. पीयूष रंजन ने उत्तर भारत की नदियों के महत्व पर एक विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि भारत की नदियां भारतीय लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नदियां पीने और सिंचाई के लिए पानी और बिजली उत्पादन के साथ-साथ देश के बड़ी मात्रा में लोगों के लिए आजीविका भी प्रदान करती हैं। उन्होंने केंद्रीय जल आयोग के उदेश्य और कार्य के बारे में भी अवगत कराया। समूह समन्वयक अनुसंधान एवं नोडल अधिकारी इंडस बेसिन डीपीआर डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सिंधु बेसिन की पांच प्रमुख नदियों के जीर्णोद्धार के लिए संस्थान ने ब्यास, चिनाव, रावी, सतलुज और झेलम की विस्तृत डीपीआर तैयार की है, जिसमें नदियों के जीर्णोद्धार के लिए विभिन्न पौधरोपण मॉडल एवं मृदा एवं जल सरंक्षण उपाय सुझाए गए हैं। उन्होंने सतलुज नदी की डीपीआर बनाने की विस्तार में जानकारी दी। इसके अलावा अन्य चार नदियों की डीपीआर के समन्वयक डॉ. जगदीश सिंह (झेलम), डॉ. अश्वनी टपवाल (चिनाव), डॉ. रणजीत कुमार (रावी), डॉ. वनीत जिश्टु (व्यास) ने भी इन नदियों की डीपीआर की विस्तृत जानकारीदी।

सेमिनार नदियों के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार के लिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में सेलिब्रेशन ऑफ रिवर्स कार्यक्रम

भारत की नदियां निभाती हैं लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका: पीयूष

वरिष्ठ संवाददाता। शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा भारत सरकार के सेलिब्रेशन ऑफ रिवर्स कार्यक्रम के तहत नदियों के सरंक्षण एवं जीर्णोद्धार के लिए जागरुकता सेमिनार का आयोजन किया गया। डॉ. एसएस सामंत ने बताया कि पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय सहित भारत सरकार के विभिन्न संबंधित मंत्रालय नदियों के संरक्षण और रखरखाव पर जोर दे रहे हैं। संस्थान ने हाल ही में संबंधित राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेशों के वन विभागों की सहायता एवं सहयोग से वानिकी गतिविधियों के माध्यम से ब्यास, चिनाब, झेलम, रावी और सतलुज नदियों के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की है। उपरोक्त डीपीआर अंततः संबंधित राज्य वन विभागों अर्थात हिमाचल प्रदेश (ब्यास, चिनाब, रावी और सतलुज), जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश (झेलम और चिनाब) और पंजाब (ब्यास, चिनाब और सतलुज) द्वारा कार्यान्वित की जाएगी। मुख्य वक्ता पीयूष रंजन ने उत्तर भारत की नदियों के महत्व पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया। उन्होंने कहा कि भारत की नदियां भारतीय लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

- मुख्य वक्ता पीयूष रंजन ने नदियों के महत्व पर विशेष व्याख्यान दिया
- ब्यास, चिनाब, झेलम, रावी और सतलुज नदियों के लिए रिपोर्ट की तैयार

नदियां पीने और सिंचाई के लिए पानी तथा बिजली उत्पादन के साथ-साथ देश के बड़ी मात्रा में लोगों के लिए आजीविका भी प्रदान करती हैं। यही कारण है कि भारत की लगभग सभी प्रमुख बस्तियां/शहर नदियों के किनारे बसे हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में भी नदियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है और देश के सभी हिंदुओं द्वारा इन्हें पवित्र माना जाता है। उन्होंने केंद्रीय जल आयोग के उद्देश्य और कार्य के बारे में भी अवगत करवाया। डॉ. संदीप शर्मा समूह समन्वयक अनुसंधान एवं नोडल अधिकारी इंडस बेसिन डीपीआर ने बताया कि वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सिंधु बेसिन की पांच प्रमुख नदियों के जीर्णोद्धार के लिए संस्थान ने ब्यास, चिनाब, रावी, सतलुज और झेलम की विस्तृत डीपीआर तैयार की है, जिसमें नदियों के जीर्णोद्धार हेतु विभिन्न पौधरोपण मॉडल एवं मृदा एवं जल सरंक्षण उपाय सुझाए गए है।

नदी की डीपीआर बनाने की जानकारी दी

उन्होंने सतलुज नदी की डीपीआर बनाने की विस्तार में जानकारी दी। इसके अलावा अन्य चार नदियों की डीपीआर के समन्वयक डॉ. जगदीश सिंह (झेलम डीपीआर), डॉ. अश्वनी टपवाल (चिनाब डीपीआर), डॉ. रणजीत कुमार (रावी डीपीआर), डॉ. वनीत जिश्टु (ब्यास डीपीआर) ने भी इन नदियों की डीपीआर की विस्तृत जानकारी दी।